महारानी... एक दिन की

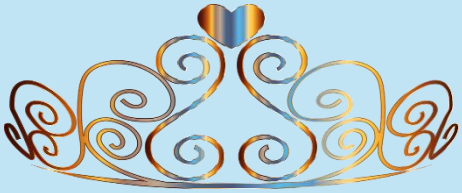

खुशियों से ओतप्रोत एक अद्भुत सुबह
रोज की दिनचर्या मानो थम सी गई
एक दिन ही सही उमंग भरी जिंदगी
अलग था जाना पहचाना ख्यालों जैसा

न हुआ राजतिलक महारानी सुशोभित
बिन बजे ढोल बाजा ऐसा राजसिंहासन
विरासत से कोसों दूर था है यह जीवन
फिर भी खुशियां भरा दिन का आगाज़

उम्मीदों पर खरा उतरा सुखमय दिन
अद्भुत था सूर्य किरणों का अहसास
अचानक अंगड़ाइयां स्वरूप का टूटना
बेहद रूमानी था हमसफर समक्ष होना

हर एक चुस्की साथ महकता गुलदस्ता
चंदपंक्तियाँ सीमा लांग कह जाए बहुत

'दस्तूर ए दिन' प्यार उमड़ते हर कोई
मानों होड़ हो हम किसी से कम नहीं

दिल मची हलचल कई सवाल ले आयें
काश हर दिन सवेरा हो ऐसा दिलचस्प
खुद से पहचान कुछ यादें फिर दोहराएँ
जादुई छड़ी को अर्जी लगाना है बाकी।

क्या खूब सवेरा दिनभर कार्यक्रम लेस
हर कोई का था सिर्फ एक ही एजेंडा
परिवारजन या मित्रों की 'एक कोशिश'
इस दिन को सार्थक खुशनुमा बनाना

बड़े सौभाग्य से मिला स्नेह भरा ताज
था उपस्थिति अहसास कुछ नया-नया
अस्तित्व पहचान पर पुनः मोहर लगी
तख्त की अहमियत भरा खास दिन

गीतांजलि सक्सेना 9.9.2024